बीती ताही बिसारिए

उपेंद्र 'अणु'

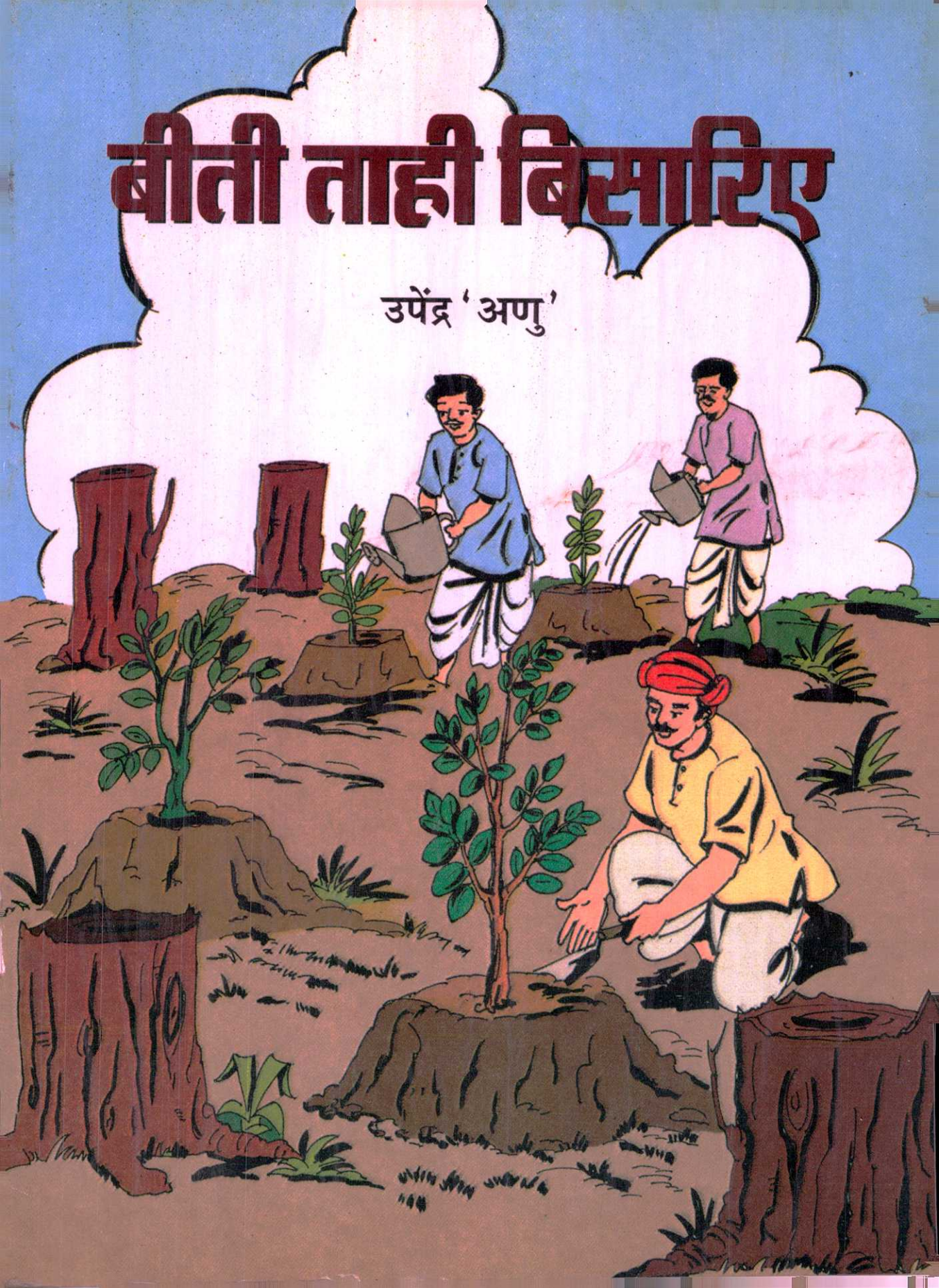

बीती ताही बिसारिए

उपेंद्र 'अणु'

(Estd : 1939)
भारतीय प्रौढ़ शिक्षा संघ

प्रभात प्रकाशन, दिल्ली™
ISO 9001:2000 प्रकाशक

प्रकाशक • प्रभात प्रकाशन™
4/19 आसफ अली रोड
नई दिल्ली-110002
तत्त्वावधान • भारतीय प्रौढ़ शिक्षा संघ
सर्वाधिकार • सुरक्षित
संस्करण • प्रथम, 2008
मूल्य • पच्चीस रुपए
मुद्रक • नरुला प्रिंटर्स, दिल्ली

BITI TAHI BISARIYE *by* Upendra 'Anu' Rs. 25.00
Published by Prabhat Prakashan, 4/19 Asaf Ali Road, New Delhi-2 (INDIA)
ISBN 978-81-7315-616-8

बीती ताही बिसारिए

एक गाँव था। नाम था सुहाया। शहरी आबादी से दूर, कुदरत की गोद में बसा हुआ। पचास-साठ घरों की बस्ती। सभी लोग खेती पर निर्भर। छोटे-छोटे खेत, छोटी सी बरसाती नदी, गाँव के चारों ओर छोटी-छोटी पहाड़ियाँ, जो कुदरती प्रकोप से उनकी रक्षा करती थीं। चारों तरफ पसरी हुई घास, यूँ लगता था—मानो धरती माता ने हरी लहरिया चूनर ओढ़ रखी हो। आम, पीपल, जामुन, नीम और सागवान के वृक्षों से लदा यह गाँव। चौपाल में बहुत पुराना बरगद—अपने अतीत में कई कहानियाँ समेटे हुए, हर अच्छाई और बुराई का साक्षी—बरसों से अविचल खड़ा हुआ।

एक दिन मुखिया रामभजन के घर कोई मेहमान आया। मुखिया ने उसकी बड़ी आवभगत की। बहुत रोबीला आदमी था। अमीरी उसके हावभाव से नजर आती थी। न जाने मुखिया और मेहमान में क्या खुसर-फुसर हुई। रात में मुखिया ने अपने खास-खास लोगों को घर बुलाया जो उसकी हाँ में हाँ मिलाते थे। उसका हुक्का भरते

थे। ऐसे दस-बीस लोग मुखिया के घर इकट्ठे हुए। खाना-पीना हुआ। हुक्का भरकर लाया गया। एक-एक कर सब हुक्का सुड़कने लगे। तब मुखिया ने मेहमान का परिचय करवाया—''यह शेरसिंहजी हैं, शहर में रहते हैं, नामी रईस हैं, बड़ी हवेली है, कई गाड़ियाँ हैं। पर यह पैदल चलकर हमसे मिलने हमारे गाँव आए। यह इनकी महानता है। हमारे गाँव की हालत देखकर यह दुःखी हुए। इन्होंने आपसे मिलने की इच्छा जाहिर की। इसलिए आप लोगों को तकलीफ दी है। मैं इनसे विनती करता हूँ कि यह आपसे अपनी बात कहें।''

शेरसिंहजी खड़े हुए। उन्होंने गाँववालों को नमस्कार किया, फिर धीरे-धीरे गाँव की गरीबी का वर्णन किया, गाँव की खस्ता हालत के बारे में बताया। गाँव के पिछड़ेपन पर बोले। और कहा, ''यह सब इसलिए है कि आपके पास रुपया-पैसा नहीं है। जबकि आपके पास कुदरत का अनमोल खजाना है।''

बीच में एक जना बोला, ''वह कैसे?''

उन्होंने मुसकराते हुए कहा, ''अच्छा सवाल है। आप लोगों के पास घना जंगल है, बड़े-बड़े पेड़ हैं, जो शहर में नहीं हैं। पर उनके पास रुपया है जो तुम्हारे पास नहीं है। अगर हम दोनों मिल जाएँ तो दोनों की तकलीफ दूर हो जाएगी।''

फिर कोई बोला, ''वह कैसे?''

"वह ऐसे कि ये पेड़ आप हमें दे दो। हम आपको ढेर सारा रुपया देंगे। आपकी गरीबी दूर हो जाएगी, सारे गाँव की काया पलट जाएगी।"

इस तरह आधे घंटे तक वह सभी को अपनी चिकनी-चुपड़ी बातों से फुसलाते रहे और भोले-भाले गाँववाले उनकी हाँ में हाँ मिलाते रहे। उन्होंने शहरी जीवन की रंगीनियों का ऐसा लुभावना वर्णन किया कि गाँववाले वहीं बैठे-बैठे सुनहरे सपनों में खोने लगे। शेरसिंह की आँखें कुटिलता से चमकने लगीं। उसके चेहरे पर मुसकराहट आ गई। मुखिया भी अपनी होनेवाली आमदनी के सपने देखने लगा। लोग अपने-अपने घरों को लौटने लगे।

लोग आपस में बातें करते जा रहे थे। अब हमारी गरीबी दूर हो जाएगी। हमारे घरों में भी खुशहाली आएगी। पेड़ तो कुदरत की देन है। इनको काटने में क्या नुकसान है? ये तो कुछ समय बाद फिर उग आएँगे पर अब हमारी गरीबी जरूर खत्म हो जाएगी।

कुछ दिनों बाद शेरसिंह ने गाँववालों से मजदूरी करवाकर वाहन आने-जाने के लिए सड़क बनवानी शुरू की। लोगों को मजदूरी के पैसे मिलने लगे। तो लोगों को लगने लगा कि उनके दिन फिरने लगे हैं। अब तक तो वे फसल के बदले अपनी जरूरत की चीजें खरीदते थे। अब पैसे देकर खरीदने लगे। जब कुछ पैसा

लोगों के हाथ में आने लगा तो गाँव में छोटी-छोटी दुकानें खुलने लगीं जिसमें खासतौर पर पान-गुटखे की और एक चाय की दुकान भी खुल गई। अब गाँव के लोग चौपाल पर बैठना कम पसंद करते थे और चाय की दुकान पर बैठकर बतियाना ज्यादा।

सड़क पूरी होते ही ट्रकों का आना-जाना शुरू हो गया। पेड़ काटे जाने लगे, और गाँव से शहर पहुँचने लगे। लोगों के पास पैसा आने लगा। लाभ और लोभ ने लोगों को अंधा कर दिया। बुरी आदतें गाँव में डेरा डालने लगीं। शराब पीकर आपस में झगड़े होने लगे। फैसलों के लिए लोग अदालत पहुँचने लगे। गाँव को शहर की गरम हवा कुछ इस कदर लगी कि पूरा गाँव उसमें झुलसने लगा।

आसपास के गाँवों में भी यह खबर फैली कि लोग पेड़ों को काटकर पैसा कमा रहे हैं। फिर क्या था! पूरे इलाके से पेड़ों का नाश होने लगा। सारा वन कटकर शहर पहुँच गया।

ग्रामसाथीजी भी उसी गाँव के थे। पूरे गाँव में एक वही पढ़े-लिखे थे। उसी गाँव में नौकरी करते थे। उन्हें पता था कि यह जो कुछ हो रहा है, अच्छा नहीं है। उन्होंने कुछ लोगों को समझाने की भी कोशिश की, पर सफलता नहीं मिली। लोग पीठ पीछे उनका मजाक उड़ाते और कहते कि मनुष्य का भंडार खाली हो सकता है पर कुदरत का नहीं। पेड़-पौधे तो धरती माँ की देन हैं, अभी कट

जाएँगे तो अगले बरस फिर उगना शुरू कर देंगे। ग्रामसाथीजी से हमारी खुशहाली देखी नहीं जा रही है, इसलिए हमसे जलते हैं और हमें उलटी-सुलटी बातें समझाते हैं। ग्रामसाथीजी इन बातों को सुनते और मन-मसोसकर रह जाते। कोई समाधान उन्हें नजर नहीं आ रहा था क्योंकि गाँववालों की आँखों पर तो रुपयों की चकाचौंध का पट्टा चढ़ा हुआ था।

धीरे-धीरे हरा-भरा जंगल कटकर साफ हो गया। जहाँ कभी ठंडी हवाएँ चलती थीं वहाँ गरम-गरम लूएँ बदन जलाने लगीं। जहाँ कभी किरणों को धरती छूने में मेहनत करनी पड़ती थी, अब सरलता से धरती पर पहुँचकर उसे तपाने लगी। हालत यह हुई कि धरती फटने लगी, बंजर होने लगी। अब बड़े-बड़े पेड़ों की जगह कटे हुए ठूँठ नजर आने लगे। तब भी कुछ लोगों को छोड़कर किसी के कानों पर जूँ तक नहीं रेंगी। सभी अपने आप में मगन थे।

दुर्भाग्य से कुदरत ने भी उस क्षेत्र से आँखें फेरनी शुरू कर दीं। उस साल बारिश बिलकुल नहीं हुई। उमड़-घुमड़कर बादल आते। लोग उन्हें टकटकी लगाए देखते, और इस आशा से देखते कि ये अब बरसने ही वाले हैं, लेकिन वे आगे बढ़ जाते। लोगों का मुँह लटक जाता। वे निराश हो जाते। पूरी वर्षा ऋतु इसी तरह निकल गई। एक बूँद भी पानी नहीं बरसा। कुएँ, बावड़ी, नदी,

नाले, पोखर सबका पानी सूख गया। कुछ गहरे कुओं में पानी था जरूर पर बहुत नीचे चला गया था। उनसे पानी निकालने में भी बहुत परेशानी आने लगी। जैसे-तैसे पीने के पानी का जुगाड़ तो हो जाता, किंतु बाकी काम में आनेवाले पानी के लाले पड़ने लगे। लोगों की चिंता बढ़ने लगी। वे इस आशा में अपने मन को समझाते रहे कि अगले बरस जरूर इंद्र महाराज की कृपा होगी और भरपूर पानी बरसेगा। सब कुछ पहले जैसा हरा-भरा हो जाएगा। इनसान क्या सोचता है और कुदरत क्या? दूसरे बरस भी वर्षा ऋतु आई। सभी जगह खूब बारिश होने लगी पर उनके इलाके में बरसात का नाम नहीं था। कुएँ और दूसरे जल के साधन पहले ही सूख चले थे। घास भी नहीं हुई थी। बिना घास के पशुओं के भूखों मरने की नौबत आ गई थी। और तो और लोगों के पास जो अनाज था, वह उन्होंने पिछले बरस ही खा-पीकर खत्म कर दिया था। अब तो खुद के परिवार को पालने में भी उन्हें परेशानी होने लगी। चारों ओर हाहाकार मच गया। लोग देवी-देवताओं के मंदिरों में जाकर बरखा आने की मन्नत माँगते, प्रार्थना करते और उदास मन से घरों की ओर लौट पड़ते।

गाँव में सोमा भगत का बड़ा मान था, इज्जत थी। वह बड़े परोपकारी थे। लोगों के दु:ख-दर्द में काम आना, उनकी सहायता

करना, पक्षियों को दाना चुगाना, पशुओं को चारा डालना, उनकी सेवा करना, उनका मुख्य काम था। सारा गाँव ही उन्हें बहुत मानता था और उनकी बात को भी मानता था। वह ज्यादा पढ़े-लिखे नहीं थे। चिट्ठी-पत्री बाँच लेते थे। पर गुणी बहुत थे। जिंदगी के कटु अनुभवों ने उन्हें काफी समझदार बना दिया था।

एक दिन ग्रामसाथीजी सोमा भगत के घर पहुँचे। उन्हें नमस्कार किया। सोमा भगत ने बड़ी प्रसन्नता से उनकी अगवानी की, उनसे गले मिले, अपने पास बिठाया, और कहा, "आज कैसे रास्ता भूल गए? मुझ गरीब की याद कैसे आ गई?"

ग्रामसाथीजी ने बड़ी पीड़ा के साथ उत्तर दिया, 'भगतजी, आप तो सब जानते हैं कि पूरे दो बरस होने को आए पर अपने इलाके में बरसात का नाम नहीं है। अकाल पड़ने के हालात पैदा हो गए हैं। पशु-पक्षी, जानवर और इनसान—सभी त्राहि-त्राहि कर रहे हैं।'

भगतजी ने कहा, "इसका क्या कारण है भला?"

ग्रामसाथीजी बोले, "कारण तो मैं जानता हूँ कि बरसात क्यों नहीं हो रही है। कुदरत हमसे क्यों रूठ गई है? पर इन लोगों को कैसे समझाया जाए? यही चिंता मुझे खाए जा रही है।"

"वह तो ठीक है। पर कारण क्या है? यह तो मुझे समझाओ। और भला गाँव में तुम्हारी बात कौन नहीं मानता। जहाँ तक मेरी

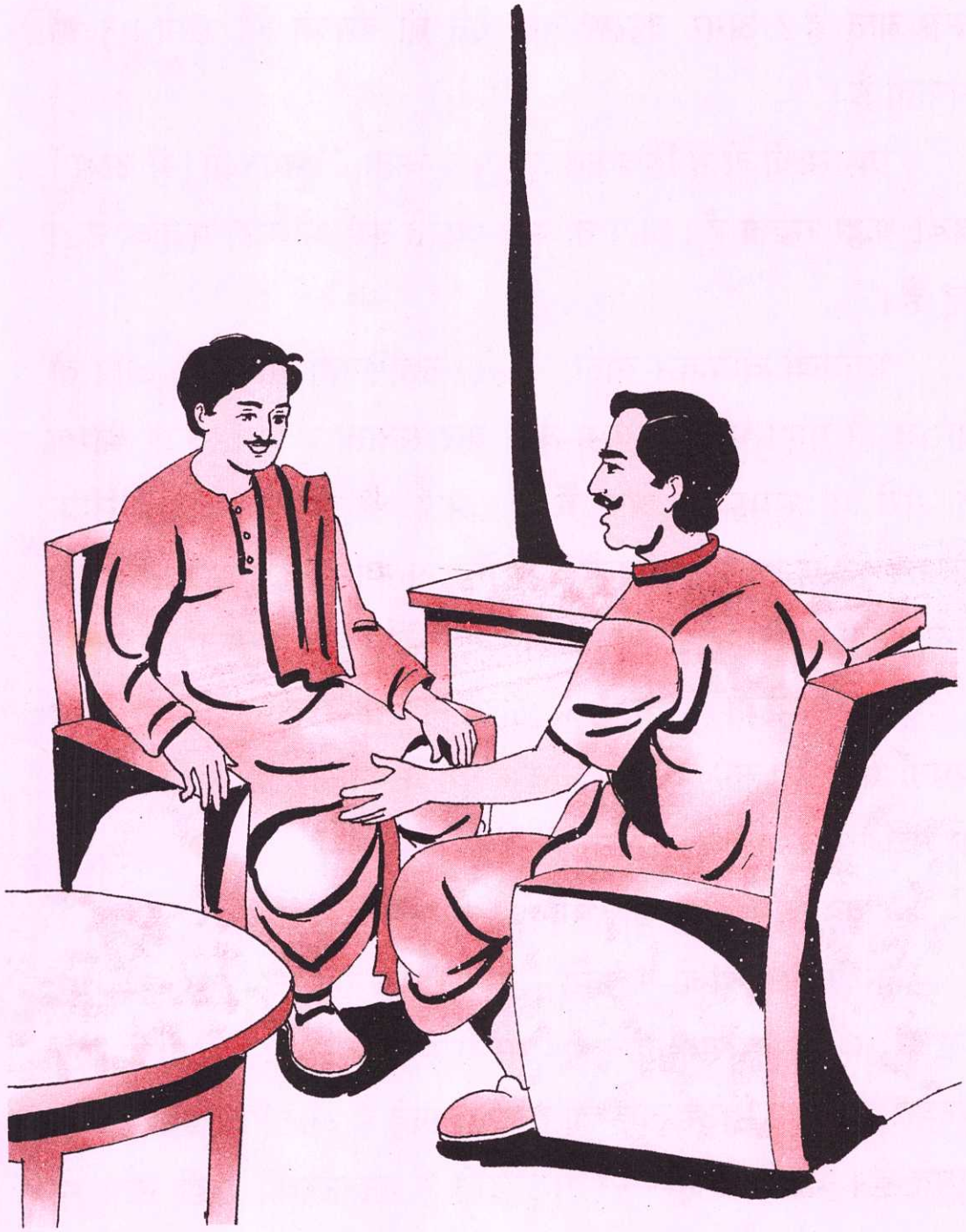

जानकारी है, गाँव के लोगों में तुम्हारी काफी इज्जत है। फिर ऐसी क्या बात है? अगर कारण बता देते तो इसका भी समाधान हो सकता है।''

ग्रामसाथीजी ने हिचकते हुए पुनः कहा, ''भगतजी! मैं आपमें बड़ी श्रद्धा रखता हूँ। आप तो सब जानते हुए भी मेरा मजाक उड़ा रहे हैं।''

भगतजी चौंककर बोले, ''अरे! नहीं-नहीं साथीजी, आप तो नाराज हो गए। भला मैं ऐसा कैसे कर सकता हूँ। हाँ, कुछ कारण तो मेरी भी समझ में आए हैं पर आप भी कुछ बताते तो ठीक रहता। कारण की हर आदमी की सोच अलग-अलग होती है। और फिर अपन दोनों मिल बैठेंगे तो कोई-न-कोई उपाय निकल आएगा।''

ग्रामसाथीजी ने कहा, ''गाँववाले शहरी लोगों के लुभावने सपनों में भरमा गए हैं, और चंद रुपयों के लालच में उन्होंने अपने ही पैरों पर कुल्हाड़ी मार ली है।''

''वह कैसे भला?'' भगतजी बोले।

तब ग्रामसाथीजी ने कहा, ''ये जो गाँव में ऊँचे-ऊँचे, हरे-भरे पेड़ थे, ये ही बरसात लाते थे। गरमी में जब समुद्र का पानी भाप बनकर आकाश में उड़ता है तो बादल बनते हैं और फिर इधर-उधर घूमते हैं। जहाँ भी हरे-भरे पेड़ होते हैं तो उनकी ठंडी हवा से

बादलों की भाप पानी में बदल जाती है, और फिर बादलों से पानी बरसने लगता है। अब पेड़ ही नहीं रहे तो बादल क्यों बरसेंगे। हमारे लोगों ने कुछ पैसों की लालच में सारे पेड़ काट दिए, जंगल खत्म कर दिया और इसी वजह से दो साल हो गए हमारे इलाके में बरसात नहीं हो रही है। सूखा पड़ गया है। पेड़ होंगे तो पानी बरसेगा, हरियाली होगी, फसलें भरपूर होंगी। पर इन लोगों को कैसे समझाया जाए? इसी चिंता के कारण मैं आपके पास आया हूँ। पिछले दिनों हुआ गाँव के हरिया का किस्सा तो आपको पता ही है। बेचारा हरिया कितना मेहनती और भोला-भाला था। अच्छी खेती थी, भरपूर पैदावार थी, दो बच्चे थे, घरवाली थी, सब तरह से खुशहाल था। न जाने किसकी नजर लग गई जब से वो पेड़ काटनेवालों के झाँसे में आया। कुछ पैसे क्या मिलने लगे उसके तो पंख निकल आए। वह तो उड़ने लगा। उसमें कुछ बुराइयाँ भी आ गईं। वह रात-दिन खराब के नशे में धुत्त रहने लगा, काम-धाम करना बंद कर दिया। और शराबी आदमी से काम होता भी कहाँ है। पहले तो वह शराब को पीता था, फिर शराब उसको पीने लगी। घरवाली उसे समझाती तो उसके साथ भी मारपीट करता था। और एक दिन बहुत ज्यादा शराब पी लेने के कारण हरिया भगवान् को प्यारा हो गया। बेचारी घरवाली और बच्चे बेसहारा हो गए।''

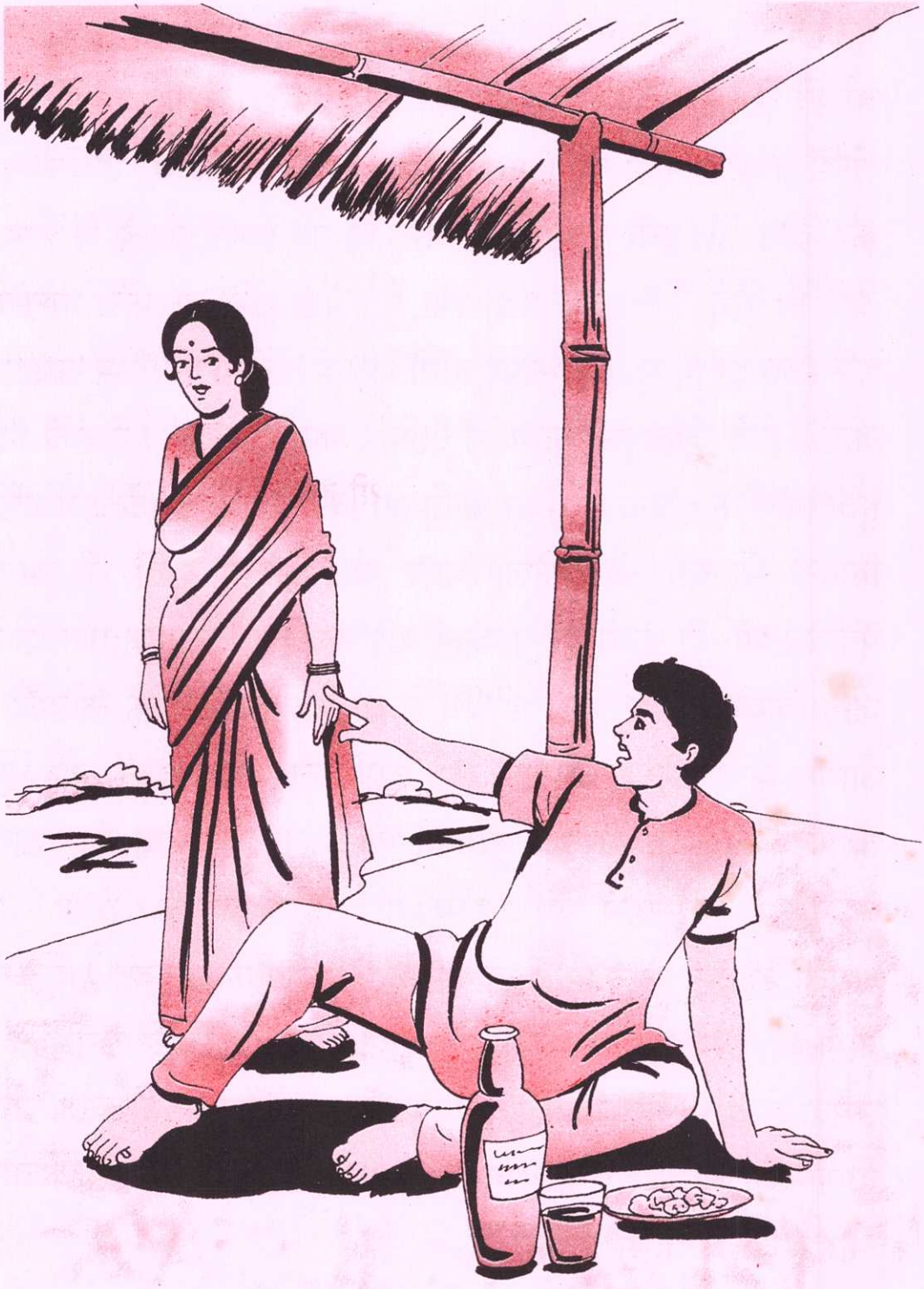

भगतजी गंभीर हो गए। उन्होंने कहा, ''यह तो बिलकुल सही किस्सा है। बेचारा हरिया का परिवार। और अब तो गाँव के कई घरों में यह बुराई घुस गई है। कुछ तो करना पड़ेगा साथीजी।''

''मैं तो आपके पास आया ही इसलिए हूँ भगतजी।'' ग्रामसाथीजी ने कहा। तब भगतजी बोले, ''मुझे एक उपाय समझ में आया है। मैं जानता हूँ कि ये गाँववाले आपकी भाषा नहीं समझेंगे। इन्हें तो इनकी ही भाषा में समझाना पड़ेगा। अगर आप मेरा साथ देंगे तो सब कुछ ठीक हो जाएगा।' ग्रामसाथीजी का चेहरा खुशी के मारे दप-दप करने लगा। उन्होंने कहा—''मैं तो आपके साथ ही हूँ।''

भगतजी ने अपनी योजना उन्हें समझानी शुरू की और कहने लगे, ''आप गाँव में जाकर गाँववालों को इकट्ठा करो और उन्हें मेरे पास ले आओ। अगर ये सब एक बार मेरे पास आ गए तो मेरा विश्वास है कि मैं उन्हें समझा लूँगा।''

ग्रामसाथीजी खुशी-खुशी गाँव की ओर रवाना हो गए। उन्होंने गाँववालों को चौपाल पर इकट्ठा किया और कहा, ''अपने इलाके में पिछले दो साल से बरसात बिलकुल नहीं हो रही है। एक बूँद पानी नहीं बरसा। फसलें नहीं हुईं। कुएँ, पोखर, तालाब सब सूख गए। पानी के बिना पशु-पक्षी और इनसान सभी परेशान हैं। इसके लिए क्या करना चाहिए। इसका उपाय खोजने के लिए आप सभी

को यहाँ इकट्ठा किया है ताकि इस पर विचार किया जा सके।''

सभी लोग आपस में खुसर-फुसर करने लगे। काफी समय निकल गया तब एक बूढ़ा आदमी खड़ा हुआ। उसने कहा, ''हम लोग तो अनपढ़ हैं, हमारी समझ में तो कुछ नहीं आ रहा है। साथीजी आप पढ़े-लिखे हैं, ज्ञानी हैं। आप ही कुछ उपाय बताएँ तो ठीक रहेगा।'' ग्रामसाथीजी खड़े हुए और बोले, ''सुनो भाइयो! मेरे दिमाग में तो एक उपाय आया है कि हम सब मिलकर सोमा भगत के पास जाएँ। वह बड़े समझदार हैं, ज्ञानी हैं, परोपकारी हैं और सेवाभावी हैं। वह जो कुछ कहेंगे गाँव के भले के लिए कहेंगे और कोई उपाय बताएँगे।'' सभी को ग्रामसाथीजी की बात जँची और वे सब मिलकर भगतजी के घर की ओर बढ़ चले।

भगतजी ने सभी की आवभगत की। उन्हें आँगन में बिठाया। फिर बोले, ''आप सब मेरे घर पधारे, मेरे धन्यभाग। मुझे बुलवा लेते, मैं हाजिर हो जाता।'' ग्रामसाथीजी ने कहा, ''काम ही ऐसा आ पड़ा था कि आपके पास आना पड़ा। दो बरस होने को आए, अपने इलाके से बरसात रूठ गई है। सभी इस बात से चिंतित हैं। बरसात नहीं होने का कारण और बरसात होने का उपाय जानने के लिए आपके पास आए हैं।''

भगतजी बोले, ''मैं तो देवी माँ का पुजारी हूँ। मेरी उनमें अपार आस्था है। मेरा ऐसा मानना है कि वही इस समस्या का

कारण और उपाय बता सकती हैं। आप सभी गाँववाले मिलकर कल देवी माँ के मंदिर में जमा हों और रतजगा करें, माँ से प्रार्थना करें तो मेरा ऐसा मानना है कि निश्चित ही हमें इस बात का जवाब भी मिलेगा और उपाय भी।''

गाँववालों को भगतजी की बातों में सार लगा और तय हुआ कि कल सारा गाँव देवी माँ के मंदिर में इकट्ठा होगा और रतजगा किया जाएगा। इसके साथ ही सभी अपने-अपने घरों को लौट गए।

दूसरे दिन गाँववालों में अजीब उत्साह था। सूरज देवता पश्चिम दिशा की ओर बढ़ते चले जा रहे थे। और गाँव के क्या जवान, क्या बूढ़े, क्या बच्चे और क्या महिलाएँ—सभी देवी माँ के मंदिर की ओर कदम बढ़ा रहे थे। किसी के हाथों में फूल, कोई घी का दीपक तो कोई प्रसाद लिये हुए था। सभी ने देवी माँ का जयकारा लगाया। माँ के चरणों में मस्तक झुकाया। भगतजी को प्रणाम किया और बैठ गए। कुछ ने ढोल-मजीरों के साथ देवी माँ के भजन गाने शुरू कर दिए।

भगतजी ने देवी माँ को प्रणाम किया और मन-ही-मन कहने लगे, ''हे माँ, मैं बचपन से आपकी सेवा करता आया हूँ और मैं जानता हूँ कि आपसे कोई बात छिपी हुई नहीं है। आज इन्हीं लोगों की गलती से ऐसा अवसर आ गया है कि मुझे झूठ-मूठ आपका भाव आने का ढोंग करना पड़ेगा। कारण कि यह भोले-भाले गाँववाले

सीधे हमारी बात नहीं मानेंगे। हमने पहले ऐसी कोशिश की भी थी पर सफलता हाथ नहीं लगी, इसलिए इन्हें आपकी भाषा में ही समझाना पड़ेगा। हे माँ! मुझे इस अपराध के लिए माफ कर देना और आशीर्वाद दो कि मैं अपनी कोशिश में सफल हो सकूँ।'

ढोल और मांदल की थाप पर भजनों की आवाज तेज होने लगी और इधर भगतजी की आँखें लाल होने लगीं, शरीर काँपने लगा। अचानक भगतजी ने जोर से किलकारी मारी और आसन पर बैठ गए। उन्होंने सभी की ओर रोष भरी नजर से देखा और कहने लगे, ''मुझे आज किसलिए याद किया?'' सभी ने देवी माँ के नाम का जोर से जयकारा लगाया, प्रणाम किया। फिर ग्रामसाथीजी ने कहा, ''माँ, गाँववालों पर बहुत बड़ी आफत आ गई है। इसलिए आपको कष्ट दिया है।''

तभी एक ग्रामीण हाथ जोड़कर बोला, ''माँ, दो बरस होने को आए, हमारे गाँव को किसी की नजर लग गई है। जो गाँव कभी खुशहाल था, आज वीरान हो गया है। इंद्र महाराज हमसे रूठ गए हैं। कुआँ, बावड़ी, पोखर, नदी, नाले, तालाब सब सूख गए हैं। बिना पानी सब त्राहि-त्राहि कर रहे हैं। ऐसी क्या भूल हो गई है कि आप भी हमसे रूठ गई हैं।'' भगतजी ने अपने चारों ओर देखा, फिर गंभीर वाणी में बोले, ''तुम सब अपने किए हुए करमों का फल भोग रहे हो। जो जैसे करम करेगा, उसे वैसा ही फल तो

मिलेगा। तुमने अपने गाँव के सारे पेड़ कुछ पैसों की लालच में काट दिए। तुमको पता है तुमने कितना बड़ा पाप किया है। क्या तुमको तुम्हारे आदमी ने समझाया नहीं था? पर उस समय तो तुम्हारी आँखों पर पैसों का पट्टा चढ़ा हुआ था। उसकी बातें उस समय तुमको कड़वी लगती थीं। तुम उसकी बातों को क्या सुनते? अब भुगतो अपनी करनी को।''

चारों तरफ एक बार तो सन्नाटा छा गया। फिर सब तरफ से 'देवी माँ रहम करो, देवी माँ रहम करो' की आवाजें आने लगीं। देवी माँ ने फिर आगे कहा, ''तुमको पता है, पेड़ों में देवताओं का निवास होता है। उन्हीं पेड़ों को काटकर तुमने देवताओं को नाराज कर दिया है। फिर बरसात की आशा करते हो तो बरसात कहाँ से आएगी?''

''हम गाँववाले निपट अनपढ़ और मूरख हैं, साथ ही भोले भी। इस कारण गलत लोगों की गलत बातों में आ गए और अपना ही सर्वनाश कर दिया। माँ, भूल तो हमसे बहुत भारी हुई है और हमें इसका पछतावा भी है पर अब हम क्या करें? और आप तो माँ हो, और माँ अपने बच्चों के सभी गुनाह माफ कर देती है। आपसे फिर विनती करते हैं कि आप बरसात लाने के उपाय बताएँ।''

तब भगतजी ने कहा, ''अब तो बरसात लाने का एक ही उपाय है। गाँव का हर एक प्राणी पाँच-पाँच पौधे अपने हाथों से

लगाए। बड़े होने तक उनकी देखभाल करे। हर एक घर में जहाँ बच्चा होने वाला हो, वहाँ बच्चे के माता-पिता पौधा लगाएँ। बच्चे के साथ-साथ उसकी भी वैसी ही देख-भाल करें जैसी वे अपने बच्चे की करते हैं। जिस घर में शादी-ब्याह हो तो पति-पत्नी मिलकर दो पौधे लगाएँ और उनकी देखभाल करें। ज्यों-ज्यों पौधा बड़ा होगा उनकी गृहस्थी भी खुशहाल होती चली जाएगी। इस उपाय से नाराज देवता भी प्रसन्न हो जाएँगे और पूरा गाँव फिर से खुशहाल होगा। बरसात भी भरपूर होगी। हाँ! एक खास बात और। गाँव का हर एक प्राणी आज इस मंदिर में यह शपथ लेगा कि आज से वह किसी हरे-भरे पेड़ को नहीं काटेगा। अगर किसी ने काटा तो उसे गौ हत्या का पाप लगेगा।''

सभी गाँववाले खड़े होकर शपथ लेते हैं। कुछ लोग खुशी-खुशी अपने घरों की ओर लौटने लगते हैं और कुछ लोग भजन मंडली में शामिल हो जाते हैं।

पीछे से मंदिर में ढोल और मांदल की थाप पर भजन की स्वर लहरियाँ सुनाई पड़ती हैं। बीती ताही बिसारिए आगे की सुध लेय...

□□□

आमुख

भारतीय प्रौढ़ शिक्षा संघ, नई दिल्ली ने नवसाक्षरों की आवश्यकताओं, अभिरुचियों और अपेक्षाओं के अनुरूप साक्षरता-साहित्य के निर्माण में नवाचार की पहल की है। हिंदीभाषी क्षेत्रों के नवसाक्षरों की पहचान की रोशनी में प्रौढ़ साक्षरता में लेखनरत साहित्यकारों, समाजार्थिक-चिंतकों, प्रौढ़ शिक्षा विशेषज्ञों तथा सतत शिक्षा केंद्रों के अनुभवी आयोजकों ने 23-24 अगस्त, 2007 की अवधि में भारतीय प्रौढ़ शिक्षा संघ में आयोजित विचार गोष्ठी में नवसाक्षरों के लिए उपयोगी साहित्य-लेखन पर गहन विचार-विमर्श किया।

साक्षरता-सामग्री के पाठ्य विवरण पर संगोष्ठी में सम्मिलित विषय विशेषज्ञों में सहमति हुई। साक्षरता सामग्री के तीन प्रमुख उद्देश्य निर्धारित किए गए। पहला उद्देश्य, जो नवसाक्षरों की साक्षरता को सजीव बनाने और आगे बढ़ाने में सहायक हो; दूसरा उद्देश्य, जो जन-कल्याण और सामूहिक कार्य-संस्कृति को बढ़ावा देनेवाला हो, ताकि सब लोग मिल-जुलकर रहते हुए विकास की ओर बढ़ें। तीसरा उद्देश्य, जो अपने अधिकारों और कर्तव्यों को ध्यान में रखते हुए सार्वजनिक हित के लिए उन्हें प्रेरणा दे सके, जिससे उनका कल्याण, समाज का हित और राष्ट्र का विकास होता रहे।

इस प्रौढ़ साक्षरता साहित्य कार्यशाला में श्री उपेंद्र 'अणु' द्वारा लिखित पुस्तक '**बीती ताही बिसारिए**' नवसाक्षरों को जागरूक पाठक बनाने और विकास के क्षेत्र में उन्हें आगे बढ़ाने के अवसर प्रदान करेगी। इसका संप्रेषण और भाषा स्तर भी प्रौढ़ नवसाक्षरों में जाँच लिया गया है। इस पुस्तक का विधिवत् क्षेत्र-परीक्षण करा लिया गया है। इस पुस्तक में नवसाक्षरों के सामाजिक सरोकारों को प्राथमिकता दी गई है। हमारा विश्वास है कि यह पुस्तक निर्धारित उद्देश्यों की पूर्ति में अवश्य सफल होगी।

इसे प्रकाशित करने में और इसे नवसाक्षरों तक पहुँचाने में प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली ने जो सहयोग प्रदान किया है, हम उसके लिए हृदय से आभारी हैं। प्रसन्नता की बात यह है कि प्रभात प्रकाशन ने इस शृंखला की सभी पुस्तकों के प्रकाशन एवं वितरण का दायित्व स्वीकार किया है। इस पुस्तक के पाठकों से हमें जो सुझाव प्राप्त होंगे, हम उनका स्वागत करेंगे।

17-बी, इंद्रप्रस्थ एस्टेट
नई दिल्ली-110002

—डॉ. मदन सिंह
महासचिव, भारतीय प्रौढ़ शिक्षा संघ

भारतीय प्रौढ़ शिक्षा संघ

प्रभात प्रकाशन, दिल्ली™
ISO 9001 : 2000 प्रकाशक